



संपादकीय

नई उड़ान पर योगी का यूपी

योगी 2.0 में उत्तर प्रदेश ने नए संकल्पों के साथ देश में नंबर एक अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य के साथ नई उड़ान भरनी शुरू कर दी है। ऐसे में उत्तर प्रदेश सरकार के दूसरे कार्यकाल के शुरूआती सौ दिन काफी अहम रहे। इस अवधि में सरकार ने बड़ी लकर खींची है। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर बनाने के लक्ष्य के साथ काम शुरू हो चुका है। सलाहकार भी चुन लिया गया है। विभागों को 10 सेक्टरों में बांटकर अगले पांच साल तक का खाका खींचा गया है। उसी के अनुसार सूक्ष्म, लघु और दीर्घकालीन योजनाएं बनाकर कार्य किया जा रहा है। अगले पांच साल में सरकार के प्रयास परवान चढ़े तो यह तय है कि देश में उत्तर प्रदेश की दशा और दिशा बदल जाएगी। उद्योग अर्थव्यवस्था का ग्रोथ इंजन है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसकी महत्ता को समझते हुए अपने पिछले कार्यकाल में जब इंवेस्टर्स समिट का आयोजन करने की घोषणा की थी, तब तमाम लोगों ने सवाल खड़े किए थे, लेकिन न सिर्फ देश-दुनिया की कंपनियों ने चार लाख 68 हजार करोड़ रुपये के एमओयू हस्ताक्षरित किए, बल्कि तीन लाख करोड़ से अधिक का निवेश धरातल पर भी उत्तर चुका है। सरकार के सौ दिनों में तीसरी ग्राउंड ब्रिंकिंग सेरेमनी भी इसी का हिस्सा है। इसमें 80 हजार करोड़ रुपये का निवेश और इसके माध्यम से पांच लाख युवाओं को रोजगार देने की प्रक्रिया को भी अंजाम पर पहुंचाया जा रहा है। सरकार की ओर से निवेश मित्र के नाम से सिंगल विंडो सिस्टम शुरू किया गया है और निर्धारित समय में साढ़े छह लाख से अधिक एनओसी जारी की गई है। सरकार ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट की भी तैयारी शुरू कर दी है। इसके माध्यम से सरकार की योजना 10 लाख करोड़ रुपये के निवेश को धरातल पर उतारने की तैयारी है। उत्तर प्रदेश में सरकार गठन के बाद सौ दिनों में विकास और गरीब कल्याण के कार्यों के साथ मिशन रोजगार ने रफ्तार पकड़ी है। सरकार के पहले ही फैसले में चाहे 15 करोड़ लोगों को निशुल्क राशन देने की बात हो या फिर 15 हजार युवाओं को सरकारी नौकरी देने की। राज्य सरकार ने वर्ष 2022-23 के बजट में 54 हजार 883 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि लोक कल्याण संकल्प पत्र की 97 घोषणाओं का भी समावेश किया है, जिसमें 44 नई मांग के लिए सात हजार करोड़ रुपये से अधिक धनराशि प्रस्तावित है। इनमें अधिकांश योजनाएं आने वाले समय में लोक कल्याण के कार्यों को नई दिशा देने वाली हैं। सड़कें तरकी का आईंवा होती हैं। प्रदेश ने पिछले पांच वर्षों में हाइवे और एक्सप्रेस-वे के क्षेत्र में अभूतपूर्व तरकी हासिल की है। गांव की गलियों से लेकर, ब्लॉक मुख्यालय, जिला मुख्यालय, दूसरे राज्यों और दूसरे देशों को जोड़ने वाले सड़कों का संजाल निर्मित किया है। आने वाले समय में दुनिया के कई देशों से अधिक एक्सप्रेस-वे कनेक्टिविटी उत्तर प्रदेश में होने वाली है। उत्तर प्रदेश 13 एक्सप्रेस-वे वाला देश का पहला राज्य बना है।

**'मानसून में बिमारियों की रोकथाम
और होमियोपैथी पद्धति से उपचार'**

डाक्टर दाप्त गम्भार

मानसून के मौसम गम हवाओं से रहत प्रदान करत हुए मासम में ताजगी और हरियाली का अहसास करवाता है। बरसात के मौसम में वातावरण में आर्द्धता तथा उमस बढ़ जाने से वातावरण में विद्यमान हानिकारक कीटाणु फलने-फूलने लगते हैं जिससे अनेक प्रकार की बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं। मानसून के मौसम में विभिन्न प्रकार के कीटाणु, जीवाणुओं, बैक्टीरिया तथा अन्य प्रकार के संक्रमण की वजह से अन्य मौसमों की अपेक्षा आपका बीमार पड़ने का खतरा दोगुना हो जाता है। मानसून के सीजन में मच्छर, जल, वायु तथा दूषित खाद्य पदार्थों के माध्यम से ज्यादातर बिमारियां उत्पन्न होती हैं। हमारे शरीर में विद्यमान मजबूत प्रतिरोधक क्षमता इन सभी बीमारियों से हमें सूखका कवच प्रदान करती है लेकिन तनाव, मौसम में बदलाव व कुछ अन्य कारणों से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है तथा हानिकारक वायरस और बैक्टीरिया शरीर की प्रतिरोधक क्षमता पर भारी पड़ जाते हैं जिससे हम कमजोर पड़ जाते हैं हालांकि ज्यादातर मामलों में रोगी तीन से पांच दिन में स्वयं स्वस्थ हो जाते हैं लेकिन कुछ अन्य मामलों में उच्च बुखार, शरीर में दर्द चकते, कमजोरी, थकान, जोड़े में दर्द के साथ उल्लिखन आदि भी शुरू हो जाती हैं। सामान्यतः बच्चे इसकी बीमारी की चपेट में ज्यादा आते हैं। मानसून के मौसम में मच्छर के काटने से हम मलेरिया, डेंगू तथा चिकनगुनिया आदि बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। बरसात के मौसम में प्रदुषित जल का सेवन करने से सामान्यतः टायफाईड, हैजा, पीलिया, हैपेटाइट्स तथा पाचनतंत्र/उदर के रोग उत्पन्न होते हैं।

वातावरण में हानिकारक वीषाणुओं की मात्रा बढ़ जाने से सर्दी फ्लू तथा इनफ्लूएंजा, नजला आदि रोग फैलते हैं। अगर हम चाहें तो मानसून सीजन में उत्पन्न होने वाली बीमारियों से बचने के लिए कुछ एतिहासी उपाय कर सकते हैं। घर में मच्छरदारनी का उपयोग करें। घर में यह ईर्द-गिर्द पानी को इकट्ठा न होने दें। अबने वाशरूम में उचित स्वच्छता/हाईजीन बनाए रखें तथा वाशरूम को प्रतिदिन साफ रखें। घर से बाहर निकलते समय शरीर के खुले अंगों पर मच्छर से बचाव के लिए क्रीम लगाइए। पानी को उबलाकर तथा फल सब्जियों को साफ पानी में धोकर ही उपयोग करें। घर में खाद्य पदार्थों को ढक कर रखें तथा ढाबे, स्टालों आदि पर खाने से परहेज करें। खांसते समय अपने नाक/मुँह को ढक लें। दिन में दो तीन बार उबला पानी पीयें तथा घर से बाहर जाते समय उबला पानी अपने साथ ले जाएं। घर तथा आसपास के निकले भी एक बड़ी धूमधारी रहिए।

बच्चों को सिखाएँ शिव आराधना का मूल मंत्र

डॉ. रीना रवि मालपानी

आज के समय में हम सभी जीवन में प्राप्त और पर्याप्ति के बीच संघर्ष करते दिखाई दे रहे हैं जिसमें हमारे जीवन में शांति और संतोष का अभाव है। उपलब्ध संसाधनों के बीच भी हमें धन्यवाद प्रेषित करना नहीं आता है। आगे जाकर यहीं चीज हमारे मन में उत्कंठा, निराशा और संत्रास को जन्म देने लगती है। हमारे बच्चे अंदर से बहुत कमज़ोर दिखाई दे रहे हैं क्योंकि वे बाहरी दुनिया में अपनी शांति की खोज कर रहे हैं जोकि केवल भ्रम मात्र है। जब आप बच्चों को भगवान से जोड़ना सीखा देते हैं तो उनमें जीवन को लेकर अलग ही आत्मविश्वास परिलक्षित होता है। वे अपनी हर अच्छाई-बुराई में ईश्वर को साक्ष्य रखते हैं और कुछ निर्णय वे स्वतंत्र रूप से

लेना स्वयं सीख जाते हैं। अपने बच्चों को शिव की से परिचित कराएंगे तो वे सत्यता और सार्थकता को समझ सकेंगे। शिव ईश्वर शिवम-सुंदरम रूप है। शिव सहजता एवं सरलता से सुन्दर है। वे ऐसे ध्यानमग्न योगी नीलकंठ बनकर अपने भी ग्रहण किए हुए हैं और बनकर विष को बाहर सज्जा इसके विपरीत भी उमापति व शांतिचित्त रूप और ध्यान - न्यूनता परिलक्षित नहीं होती वाले भोलेनाथ स्वयं वैराग्य विराजते हैं। ध्यान की उत्कृष्ट शिव अपने आराध्य श्रीराम को अपने भावों की माला न सृष्टि के कल्याण के लिए

सोशल मीडिया को असभ्यता का अङ्गु बनने से रोकना होगा !

दीपक कुमार त्यागी
भारतीय संविधान देश के प्रत्येक
नागरिक को अधिकृति की पूर्ण आजादी
प्रदान करता है, लेकिन कानून के
दृष्टिकोण से देखा जाए तो इसके बहुत
सारे अपवाद भी मौजूद हैं। आप
अधिकृति की आजादी के नाम पर
किसी भी दूसरे व्यक्ति की अवामानना
नहीं कर सकते हैं, किसी भी दूसरे
व्यक्ति के मान-सम्मान को ठेस नहीं
पहुंचा सकते हैं, समाज में धार्मिक व
जातिगत आधार पर किसी भी प्रकार की
दर्भावना व नफरत नहीं फैला सकते हैं।

वेसे भी अभिव्यक्ति की आजादी का यह मतलब नहीं होता है कि आप देश में सर्वोच्च पदों पर आसीन लोगों के बारे में सोशल मीडिया के बेहद सशक्त प्लेटफार्म पर सार्वजनिक रूप से असंसदीय व असम्भ्य हैशटैग तक चलावाने का असम्भ्यता की पराकाष्ठा वाला कृत्य करो। यहां आपको मैं याद दिला दूँ कि जिस तरह से सोशल मीडिया के सशक्त माध्यम के दुरुपयोग का नमूना 24 जुलाई 2022 को भारतीय राजनीति के संदर्भ में पूरी दुनिया ने देखा है, वह बेहद शर्मनाक था। उसके संदर्भ में कहा जा सकता है कि यह दिन भारतीय राजनीति के इतिहास में अंध भक्तों के भारी भीड़ के चलते एक ऐसे शर्मनाक दिन के रूप में दर्ज हो गया है, जब भारत के ही लोग अपने चुनें हुए संवैधानिक पदों पर आसीन जन प्रतिनिधियों के बारे गालियों का असम्भ्यता से परिपूर्ण हैशटैग बनाकर उसको खुद ही टॉप पर ट्रैड करवाकर खुद अपनी पीठ थपथथा रहे थे। हालांकि सरकार को व आईटी कंपनियों को मिलकर यह तय करना चाहिए कि इस तरह के कृत्य की भविष्य में फिर कभी पुनरावृति ना होने पाये। इन असम्भ्य हैशटैग ने ना केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि मोदी व केजरीवाल सरनेम वाले सभी लोगों की भावनाओं को आहत करने का कार्य किया है। देश की केन्द्रीय जांच एजेंसियों को तत्काल इन असम्भ्य हैशटैगों की शुरूआत करने वाले लोगों की पहचान करनी चाहिए और उन सभी लोगों के खिलाफ मामला दर्ज करके इसके लिए जिम्मेदार सभी दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए, जिससे कि भविष्य फिर कोई व्यक्ति इस तरह की ओछी मानसिकता के द्वारा समाज में

नफरत फैलाने का व संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों के बारे में ऐसे बेहूदी भरे असभ्य शब्दों का उपयोग करने की जरूरत ना कर सकें।" वैसे भी जिस तरह का दौर चल रहा है उसमें आज महात्मा गांधी के देश में लोकतांत्रिक मूल्यों की हर हाल में रक्षा व राजनीतिक सुचिता को बनाएं रखना बेहद अहम हो गया है। इसलिए अब आवश्यक हो गया है कि देश के प्रत्येक छोटे-बड़े राजनेताओं व उनके राजनीतिक समर्थकों के द्वारा जिस तरह से एक दूसरे के प्रति सार्वजनिक रूप से आयेदिन बेहद बेहूदी पूर्ण व असभ्य असंसदीय भाषा का उपयोग किया जाने लगा है वह सब तत्काल बंद होना चाहिए। इन लोगों को समझना चाहिए कि क्षणिक राजनीतिक लाभ के लिए इस तरह की बेहद ओछी मानसिकता से परिपूर्ण वेचार व राजनीतिक सोच पर अब लगाम लगानी चाहिए। क्योंकि इन चंद्र प्रभावशाली लोगों की एक-एक हरकतों को देश का आम जनमानस हूबूकॉपी करके उपयोग करने का कार्य करता है,

जिसके चलते सभ्य समाज में तेजी से असभ्यता बढ़ने का खतरा उत्पन्न हो गया है।** वैसे तो भारतीय कानून सोशल मीडिया पर लोगों को केन्द्र की मोदी सरकार, केजरीवाल व अन्य किसी भी सरकार की नीतियों की आलोचना करने का पूरा हक भी प्रदान करता है। क्योंकि कोई भी सरकार जब जनता से किये गये अपने वादों को पूरे नहीं करेगी या जनता उसके कार्यों से संतुष्ट नहीं होगी, तो आप जनमानस के पास उस सरकार पर जमकर हमला बोलने का कार्य करने का सबसे सरल माध्यम सोशल मीडिया ही है। लेकिन सभ्य समाज में हेमेशा शब्दों की गरिमा का ध्यान रखना हम सभी लोगों का नैतिक कर्तव्य व दायित्व है, सभ्य समाज में किसी भी व्यक्ति को असभ्यता करके उद्ढंडता पूर्ण व्यवहार करने का अधिकार नहीं है, किसी की भावनाओं से

मा का ध्यान रखना हम समा लागा का

नैतिक कर्तव्य व दायित्व है, सभ्य समाज में किसी भी व्यक्ति को असभ्यता करके उद्धंडता पूर्ण व्यवहार करने का अधिकार नहीं है, किसी की भावनाओं से खिलवाड़ करने वा अधिकार नहीं है। हम सभी लोगों को यह समझना होगा तिसे सोशल मीडिया अपने विचारों को दुनिया तक पहुंचाने का आज सबसे सशक्त व तेज प्लेटफॉर्म बन भी गया है।

सारांश माझी अपेक्षा विद्यारा का दुनिया तक पहुंचने की आज सबसे सशक्त व तेज प्लेटफॉर्म बन चुकी है।

गया है

आओ निंदा त्यागने का संकल्प लें

किशन भावनानी

सृष्टि में खुबी-खुरात मानवीय जीव का रचना कर रचनाकर्ता नें उसमें गुण और अवगुण रूपी दो गुलदस्ते भी जोड़ हैं और उनका चयन करने के लिए 84 लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ बुद्धि का सृजन मानवीय योनि में कर अपने भले भुरे सोचनें का हक उसी को दिया है परंतु हम अपनी जीवन यात्रा में हम देखते हैं कि मानवीय जीव अवगुण रूपी गुलदस्ते का चुनाव खुद कर उसमें ढल जाता है और अंत में दोष सृष्टि रचनाकर्ता को ही देता है कि मेरे जीवन को नरक बना दिया जबकि गलती मानवीय जीव की ही है कि उसने ही अपनी बुद्धि से उस अवगुण रूपी गुलदस्ते को चुना!! यूं तो अवगुणों को सैकड़ों शब्दों, बुराइयों से पुकारा जाता है जिसमें आज हम निदा बुराई, दूसरों पर उंगली उठाना इस अवगुण की चर्चा कर करेंगे आओ निंदा रूपी अवगुण त्यागने का संकल्प लें। साथियों बात अगर हम निंदा की करें तो किसी ने खूब ही कहा है कि, संसार में प्रत्येक जीव की रचना ईश्वर अल्लाह ने किसी उद्देश्य से की है। हमें ईश्वर अल्लाह की किसी भी रचना का मरम्हूल उड़ाने का अधिकार नहीं है। इसलिए किसी की निंदा करना साक्षात परमात्मा की निंदा करने के समान है। किसी की आलोचना से आप खुद के अहंकार को

विलयित, नेकी, अंपादा को नष्ट नहीं रह प्रखर है, उस बादल छा जाएं तेजस्विता और सकती। साथियों गांकलन दूसरों से, अपनी प्रशंसा ख्य के समान है। ५ कलंक तो देख बाल को नहीं देख परों के दोषों को निनेक दोषों से भरे दिखाई देते हैं, और अपने चित्त की की निंदा किसी तीती। इस संबंध में कि हमें परखने रना दुश्मन किसी यह याद रखना जारी आंखों से को दो ही आंखों बात अगर हम नने की करें तो, दूसरे के दोषों पर उसे याद रखना मुझी उसकी तीन ओर सकेत कर इससे परस्पर वैमनस्य, कटुता और संघर्ष बढ़ते हैं। इसीलिए कहा है कि दूसरों के कृत्याकृत्यों को न देखो, केवल अपने ही कृत्यों का अवलोकन करो। यूं तो लोग चुप रहने वाले की निंदा करते हैं। बहुत बोलने वाले की निंदा करते हैं, मितभाषी की निंदा करते हैं, संसार में ऐसा कोई नहीं है, जिसकी निंदा न होती हो, इसीलिए कहा है- जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कह बनाय। ताको बुरा न मानिए, लेन कहां यूं जाए।' केवल दूसरों द्वारा अपनी निंदा सुनकर मनुष्य अपने को निर्दित न समझें, वह अपने आप को स्वर्य ही जाने, क्योंकि लोक तो निरकुश है, जो चाहता है सो कह देता है। द्वेषी गुण न पश्यति, दोषी गुणों को नहीं देखता। साथियों बात अगर हम परनिंदा में आनंद की करेंतो परनिंदा में प्रारंभ में काफी आनंद मिलता है लेकिन बाद में निंदा करने से मन में अशांति व्याप्त होती है और हम हमारा जीवन दुःखों से भर लेते हैं। प्रत्येक मनुष्य का अपना अलग हृष्टिकोण एवं स्वभाव होता है। दूसरों के विषय में कोई अपनी कुछ भी धरण बना सकता है। हर मनुष्य का अपनी जीभ पर अधिकार है और निंदा करने से किसी को रोकना संभव नहीं है। न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः काकःसवरंसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति। ॥ अर्थ इन लोगों की निंदा (बुराई)

नहीं आता। जेस कोवा सब रसों का भोग करता है परंतु गंदगी के बिना उसकी संतुष्टि नहीं होती, लोग अलग-अलग कारणों से निंदा रस का पान करते हैं। कुछ सिर्फ अपना समय काटने के लिए किसी की निंदा में लगे रहते हैं तो कुछ खुद को किसी से बेहतर साबित करने के लिए निंदा को अपना नित्य का नियम बना लेते हैं। निंदकों को संतुष्ट करना संभव नहीं है।

साथियों बात अगर हम निंदा पर वैश्विक विचारों की करें तो, महात्मा गांधी ने भी कहा है कि दूसरों के दोष देखेने की बजाय हम उनके गुणों को ग्रहण करें। दूसरों की निंदा अश्रेयस्कारी है। निंदा करने व सुनने में व्यक्ति प्रायः आनंद लेता है। जबकि निंदा सुनना व निंदा करना, दोनों ही विषय है। इसीलिए हमारे महापुरुषों ने तो कहा है कि देखा परदोष। अर्थात् स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना। भगवान् बुद्ध ने कहा है, जो दूसरों के अवगुणों की चर्चा करता है, वह अपने अवगुण प्रकट करता है। भगवान महावीर ने भी कहा है कि किसी की निंदा करना पीठ का मांस खोने के बराबर है। विधाता प्रायः सभी गुणों को किसी एक व्यक्ति या एक स्थान पर नहीं देता है। इसा मसीह ने कहा था, लोग दूसरों की आखों का तिनका तो देखते हैं, पर अपनी आंख के शहतीर को नहीं देखते।

दृष्टिकोण को समझने को काशश करता है। हमारी सद्व्यवना या दुर्भावना ही किसी को मित्र या शत्रु मानने के लिए बाध्य करती है सद्व्यवना अनुकूल स्थिति के कारण होती है और दुर्भावना प्रतिकूल स्थिति के कारण होती है। लोगों के छिपे हुए ऐसे जाहिर मत करो। इससे उसकी इज्जत तो जरूर घट जाएगी, मगर तेरा तो ऐतबार ही उठ जाएगा। साथियों बात अगर हम दूसरों के दोष ढूँढ़ना, निंदा करना मानवीय स्वभाव की करें तो, दूसरों की निंदा करना। सदैव दूसरों में दोष ढूँढ़ते रहना मानवीय स्वभाव का एक बड़ा अवगुण है। दूसरों में दोष निकालना और खुद को श्रेष्ठ बताना कुछ लोगों का स्वभाव होता है। इस तरह के लोग हमें कहीं भी आसानी से मिल जाएंगे। प्रतिवाद में व्यक्ति समय गंवाने से बेहतर है अपने मनोबल को और भी अधिक बढ़ाकर जीवन में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहें। ऐसा करने से एक दिन आपकी स्थिति काफी मजबूत हो जाएगी और आपके निंदकों को सिवाय निराशा के कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। इसीलिए सब तरफ गुण ही ढूँढ़ने की आदत डालो। देखो कितना आनंद आता है। दुनिया में पूर्ण कौन है हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियां रहती हैं। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि न

जीवन कौशल शिक्षा क्या है?

व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर ही बच्चे का विकास संभव हो सकता है। यही कारण है कि जीवन कौशल शिक्षा हर किसी के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जीवन कौशल शिक्षा में, एक बच्चे के समग्र व्यक्तित्व को ध्यान में रखा जाता है। यह किसी भी तरह की स्थिति को संभालने की ताकत देता है और किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष का सामना करने का साहस देता है। स्कूली पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा को शामिल कर बेहतर परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। एक व्यक्ति को अपने और अपने आसपास के वातावरण में और अन्य लोगों के साथ बातचीत करने के लिए और विभिन्न प्रकार की समस्याओं के समाधान खोजने के लिए उच्च क्षमता की आवश्यकता वाले निर्णय लेने के लिए सामाजिक विशेषताओं और व्यक्तित्व क्षमताओं के एक सेट की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए किसी भी स्थिति से सकारात्मक रूप से निपटने के लिए आवश्यक कौशल को जीवन कौशल कहा जाता है। जीवन कौशल को समाज के अनुकूल होने और व्यक्तिगत व्यवहार में सकारात्मकता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।

खेल संदेश

शोएब अख्तर की जिंदगी पर बनेगी बायोपिक, टीजर रिलीज

करायी। पाकिस्तान के तेज गेंदबाज शोएब अख्तर की जिंदगी पर जल्द फिल्म रिलीज होने जा रही है। अख्तर ने खुद सोशल मीडिया पर फिल्म का टीजर शेयर किया है जिसमें अभिनेता धूंध में ढेन की पटरी पर दौड़ता दिखाई।

देता है। इसी आले साल नंबर में रिलीज होगी। इसका नाम 'रावलपिंडी एक्सप्रेस - विपरीत परिस्थितियों में दौड़ना' रखा गया है। अख्तर ने सोशल मीडिया पर लिखा- इस खुबसूरत यात्रा की शुरुआत। मेरी कहानी, मेरी जिंदगी, मेरी बायोपिक के लोंग्न की घोषणा करते हुए।

रावलपिंडी एक्सप्रेस - विपरीत परिस्थितियों में दौड़ना अगर आको लगता है कि आप पहले से ही बहुत कुछ जानते हैं, तो आप गलत हैं। आप एक ऐसी सवारी के लिए तैयार हैं जिसे आपने पहले कभी नहीं लिया है। क्यूंकि फिल्म प्रोडक्शन द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय परियोजना। किसी पाकिस्तानी खिलाड़ी के बारे में पहली विदेशी।

रावलपिंडी एक्सप्रेस फिल्म पर बने रहें।

विवादाप्प सूप से तुहारा

शोएब अख्तर

बता दें कि भारतीय बाजार में किकेटर्स पर फिल्म बनाने का चयन काफी लोकप्रिय है। यहां महोदय सिंह धोनी, मोहम्मद अजहरुद्दीन, कपिल देव, प्रवीण तांबे पर फिल्में बन चुकी हैं।

बारिश के कारण दृढ़ हुए दूसरे वनडे में बरसे किंटम डिकॉक, बनाए ध्यांधार 92 रन

लीड्स। दक्षिण अफ्रीका के सलामी बल्लेबाज किंटम डिकॉक ने इंग्लैंड के खिलाफ लीड्स के मैदान पर खेले गए दूसरे वनडे में ध्यांधार 92 रन जड़ दिए। डिकॉक जब शतक की ओर बढ़ रहे थे तब बारिश आ गई। यह इन्हीं तेज थी कि इसके बाद मैच शुरू ही नहीं हो पाया। आखिरकार अॉफिशियल ने मैच को रद्द कर दिया। उस



वक्त डिकॉक 76 गेंदों में 13 चौकों की मदद से 92 रन बनाकर खेल रहे थे। दक्षिण अफ्रीका ने पहले खेलते हुए खराब शुरुआत की थी। डिकॉक के साथ ओपनिंग पर जोनेमन मलान आरे थे लिंकिन वह केवल 11 रन बनाकर खेले गए पर रोय थमा बैठे। इसके बाद डिकॉक ने रासी दूसरे के साथ खिलाफ करके बाद आगे चले।

दूसरे 38 गेंदों में 26 रन बनाकर आदिल गांशिद की गेंद पर आऊट हुए। डिकॉक तब भी नहीं रुके, मार्करम के साथ मिलकर उन्होंने इंग्लैंड के गेंदबाजों की खुब पिटाई की। लेकिन तभी बारिश ने आकर खेल बिगड़ दिया।

डिकॉक अगर इस मैच में शतक बना देते तो यह उनके वनडे करियर का 18वां शतक होता। ऐसा कर वह भरत के शिखर धनव, और्स्ट्रेलिया के एरोन फिच और पाकिस्तान के बाबर आजम के 17 वनडे शतक लगाने के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ जाते। डिकॉक तब डेविड वार्नर, मार्टिन गुप्टिल की बाबरी कर सकते थे।

राष्ट्रमंडल खेल: संदीप मेहता की जगह अनेशा घोष 'प्रेस अटैची' नियुक्त

नई दिल्ली। स्वतंत्र पत्रकार अनेशा घोष को गुरुवार से शुरू हो रहे बर्मिंघम राश्ट्रमंडल खेलों के लिए संदीप मेहता की जगह भारतीय दल का 'प्रेस अटैची' नियुक्त किया गया है। घोष को अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को सभालने के लिए नियुक्त किया गया है। भारतीय ओपनिंग सघ (आओए) के कारबाहक अध्यक्ष अनिल खाना ने पीटीआई से कहा, "हमें अच्युत चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए किसी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।" खाना ने यह भी बताया कि आईआईआई से कहा, "हमें अच्युत चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।" अनेशा घोष ने यह भी बताया कि आईआईआई से कहा, "हमें अच्युत चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।" अनेशा घोष 'प्रेस अटैची' नियुक्त किया गया।" अनेशा घोष 'प्रेस अटैची' नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।" अनेशा घोष 'प्रेस अटैची' नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष) नियुक्त किया गया।"

उन्होंने आपको अन्य चीजों के अलावा सोशल मीडिया को संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी, इसलिए उहाँ (घोष)

